पद ६० (आरती)

(राग: काफी - ताल: धुमाळी)

व्यंके तुज मंगल हो सन्माणिक श्री मंगल हो। शंकाकर भवपंका हरिसी कलंकाऽमर करी रंका माय तूं ॥धु.॥ यमनियमासनबीजे चिच्छाया सुन्दरि सहजे। बिंबभास सदसन्मिथ्या भ्रम विषय भोग साधन आणि साक्षिणी ॥१॥ मायाधृत शुभ षट्कमले प्रणवाकृति कुंडलि विमले। हंसरूप अजपाजप धारिणी अमृतदानी नित्य दृश्य गर्भिणी ।।२।। अष्टपीठ मूलस्तम्भे लीलाधृत विश्वकदम्बे। सद्वितंड ब्रह्मांडा मांडिसी चिन्मार्तांड सुखाब्धि विवर्धिनी ॥३॥